।। फर्ज ।। नन्दलाल भारती

कहानी

जोर जोर से गेट पीटने की आवाज सुनकर मिसेज आरती बाहर आयी । गेट पीटने वाली से बोली भइया गेट तोड रहे हो या बुला रहे हो । आग बरसती गर्मी में क्या काम पड गया । कहां जाना हैं तुमको । क्यो इतना पी लेते हो । घर में बीबी बच्चों का फांके का ख्याल आता है । बाल बच्चे घर परिवार सब भूल गये दारू की मौज में । इतना भी पता नही है कि कहां जाना है । अरे नही पचती तो क्यों पी लेते हो। क्यों गेट पीट रहे हो आगे बढो । अपने घर में भी चैन से नही रह सकते ।कैसे कैसे लोग है जमाने में अपनी अय्याशी के लिये खुद के घरपरिवार को तबाही में तो झोंकते ही हैं दूसरों का चैन भी छिनते है ।जाओ भइया अपने घर जाओ । मुझे तुम्हारी कुछ नही सुननी है ।

तुम्हारे पडोस वाले सुनील फण्डुनीसा का बिजली का कनेक्शन करने आया हूं । मेरी बात तुमको सुनना पडेगा । मैं सक्सेना हूं नशे में धुत आदमी बोला ।

मिसेज आरती–सुनील का पांच साल पुराना मकान है ।बिजली का कनेक्शन उनके यहां हैं तो नया कनेक्शन क्यों करवायेगे ।

सक्सेना लडखडाती हुई जबान में बोला –करना है तो करना है बस ।

मिसेज आरती– सुनील फण्डुनीसा के घर जाओ ।

सक्सेना लडखडाती आवाज में बोला तुम्हारी छत पर जाना है ।

मिसेज आरती–हमारी छत पर क्यों ।

सक्सेना–बहुत सवाल करती हो । अरे कनेक्शन तुम्हारी छत पर जाकर ही तो करूंगा ।

मिसेज आरती–मेरी छत पर नही जाना है कहकर ज्योहिं घर में आई फिर सक्सेना गेट पीटने लगा है ।

मिसेज आरती बेटे रंजन से बोली बेटा देख अब कौन आया । तेरे पापा सो रहे है । टैंकर की इन्तजार में रात भर जागते रहे।रात को दो बजे तो टेंकर का पानी आया था । पैसा भी दिन रात टकटकी लगाये रहो ये टेंकर वाले भी पैसा लेने के बाद रूला देते है ।पानी की समस्या ने चैन छिन लिया है दूसरे ना जाने कहां कहां से बिन बुलाये आ जाते है । लोग ना जाने क्यो तनिक आराम करने लेटे तभी आ धमकते है । जा बेटा रंजन देख ले ना ।

रंजन–देखता हूं मम्मी कहकर बाहर गया । गेट पर बेसुध खडे आदमी से पूछा कौन हो अंकल पानी पीना है क्या ।

नहीं मुझे तुम्हारी छत पर जाना है । फण्डुनीसा का कनेक्शन करना हैं । फण्डुनीसा ने भेजा है ।

रंजन–अंकल फण्डुनीसा के घर के सामने ही तो बिजली का खम्भा है वहां से क्यो नही कर देते कनेक्शन । हम तो आपको पहचानते भी नही । कैसे आपको अपनी छत पर जाने दूं । फण्डुनीसा अंकल को आपके साथ आना था ।

सक्सेना– मैं चोर नही बिजली विभाग से आया हूं ।

रंजन– बिजली विभाग से आये हो तो अंकल के घर के सामने वाले पोल से कनेक्सन क्यों नही कर देते । हम लोगो को आग बरसती दोपहरी में क्यों परेशान कर रहे हो ।

सक्सेना– तुम्हारी पडोसी फण्डुनीसा कहता है । मेरे घर के सामने वाले पोल में बिजली कम आती है और यहां ज्यादा रहती है । इसीलिये फिर से कनेक्सन करवा रहा है । मुझे क्या करना हैं मुझे तो बस पैसा चाहिये चाहे जहां से करवाये ।
रंजन–ठीक है जाओ पर ज्यादा टाइम नही लगाना ।
सक्सेना– टेम तो लगेगा कहते हुए छत पर गया केबल छज्जे में अटकाया । छत से नीचे उतरा और खम्भे पर चढकर केबल खींचने लगा । केबल खीचने की वजह से पौधे की छोटी छोटी डाले और पत्तियां टूटने लगी । कुछ ही सेकेण्ड में बादाम की मोटी डाल टूटकर धडाम से गिरी । पौधों का नुकशान मिसेज आरती से बर्दाश्त नही हुआ । वे बोली क्यो भाई आप कनेक्शन कर रहे हैं या मेरे पौधे तोड रहे है । पीने को पानी नही मिल रहा है ऐसे हालात में भी मैं पौधों को सींच रही हूं । मेरे आंगन की हरियाली आप क्यो उजाड रहे हो भइया ।
सक्सेना–देख बकबक ना कर जरूरत पडी तो ये पेड पौधे कट भी जायेगे ।
मिसेज–आरती क्या कहा तुमने तेज आवाज में बोली।
सक्सेना– हां ठीक सुनी हो । ये पेड पौधे काटे भी जा सकते है ।
मिसेज आरती– वो भाई याद रख जो पौधे तोड रहे हो वे पौधे खैरात की जमीन में नही हमारी अपनी जमीन में लगे है।ये जमीन पसीने की कमाई से खरीदी गया है । ।इन पौधे का ख्याल मैं अपने परिवार सरीखे रखती हूं । तुम काटने की बात कर रहे रहे हो ।देखती हूं कैसे काटते हो ।
इतना सुनते ही सक्सेना तमतमाते हुए नीचे उतरा । अपशब्द बकते हुए चिल्ला चोट करने लगा । शोरगुल सुनकर मिस्टर लाल की नींद खुल गयी वे भी बाहर आ गये । उनको देखकर मिसेज आरती बोली देखो जी ये आदमी पौधे तोड रहा है,काटने की बात कर रहा है उपर से चिल्लाचोट भी कर रहा है ।
मिस्टर लाल क्यो जनाब क्यों आतंक मचा रहे है । कौन है आप। क्यों तुम्हारी नजर मेरे पौधे की हरियाली पर लग रही है । हमारा नुकशान कर रहे हो । भरी दोपहरी में चिल्लाचोट कर रहे हो कैसे आदमी हो ।इंसान होकर इंसानियत का धर्म भूल रहे हैं । अपने फर्ज का कत्ल कर रहे है । हमारे बगीचे को जानवर की तरह चर रहे हो कैसे आदमी हो भाई ।
सक्सेना– तुम्हारे पडोसी फण्डुनीसा का कनेक्सन कर रहा हूं तुम्हारा नुकशान नही कर रहा हूं ।
मिस्टर लाल– ये पौघे कैसे टूटे है । क्या यह नुकशान नही है ।
सक्सेना–तुमको आब्जेकसन है ।
मिस्टर लाल– तुम कनेक्शन करने के बहाने मेरा बगीचा उजाड रहे हो और उपर से पूछ रहे हो आब्जेक्शन है ।
सक्सेना–आब्जेक्सन है ये लो किससे बात करनी है कर लो मोबाइल दिखाते हुए बोला ।
मिस्टरलाल– होश में आओ । बताओ किसकी परमिशन से खम्भे पर चढे हो । तुम्हारे पास कोई कागज है तो दिखाओ ।
सक्सेना– तुम कौन होते हो पूछने वाले। वह फिर मोर्बाइल दिखाते हुए फिर बोला ये लो कर लो न बात । देखता हूं किससे बात करते हो । देखता हूं मुझे कौन रोकता है मुझे कनेक्शन करने से। मैं एक फोन करूंगा तो सीधे अन्दर जाओगे ।

मिस्टरलाल–नशे में हाथी भी चींटी दिखायी पडती है ।फण्डुनीसा का कनेक्सन कर रहा है अनएथोराइज ढंग से और मुझे धमका रहा है । इतनी बडी दादागीरी । चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत तुम चरितार्थ कर रहे हो सक्सेना ।
सक्सेना–तुम फण्डुनीसा को नही जानते क्या ।
मिस्टरलाल– अरे भाई ऐसे मुर्दा सरीखे लोगों को जानने से बेहतर ना ही जानो । ये मतलबी लोग है जब जरूरत पडती हैं तब पहचानते है । बिना जरूरत के तो मातम वाले घर की तरफ नही देखते । अब तुम अपनी बकबक बन्द करो । याद रखो मेरे पौधों को नुकशान नही पहुंचाना ।
सक्सेना लालपीला हो रहा था मिस्टरलाल उसे समझााने का प्रयत्न कर रहे थे इसी बीच सुनील फण्डुनीसा आ गया ।वह सक्सेना को एक तरफ करते हुए बोला तू अपना काम कर देखता हूं कैसे रोकता है ।
मिस्टरलाल– भई फण्डुनीसा ाराफत भी कोई चीज होती है ।एक पडोसी का दूसरे के प्रति कुछ दायित्व होता है । पडोसी होने के आदमी का फर्ज और अधिक बढ जाता है । आप इतने बडे आदमी है कि एक दरोडियों को भरी दोपहरी में मेरे घर भेज दिये । क्या यही अच्छे पडोसी का फर्ज बनता है ।
फण्डुनीसा –अच्छा तो तू मुझे ाराफत सीखायेगा। फर्ज पर चलना सीखायेगा । मुक्का तानते हुए बोला चल हट नही तो अभी दो दूंगा तो सारी अकड निकल जायेगी ।चला है एथोराइज अनएथोराइज की बात करने ।
मिस्टरलाल–अरे अपनी औकात में रह फण्डुनीसा । अपने बालबच्चो को पाल ,पढा लिखा गुण्डई ाराफत का गहना नही है । बीयर बार में गिलास धोकर तो परिवार चला रहा है । मालूम है जब ारीफ आदमी बदमाशी पर आता है तो तुम्हारे जैसे गुण्डे नेस्तानाबूत हो जाते है ।
फण्डुनीसा –हां मैं तो गुण्डा हूं नेस्तानाबूत करके देख लेना।
मिसेज आरती– पडोसी भगवान की तरह होते हैं । यहां तो पडोस में ौतान बसते है । एक तरफ व्यभिचारी तो दूसरी तरफ गुण्डा कैसे ारीफ लोग रह पायेगे ।गुण्डे किस्म के लोग अभी तक तो झुग्गी झोपडी का सहारा लेते थे । अब ारीफों की बस्ती में घुसपैठ करने लगे है ।
फण्डुनीसा –तुम लोग कितना भी चिल्लाचोट कर लोग मेरा कनेक्शन तो तुम्हारे घर के सामने के पोल से ही होगा ।
मिस्टर लाल– फण्डुनीसा गुण्डाजी अवैध कनेक्शन करवाओगे । मेरे पेड पौधों को काटोगे या मेरा कनेक्शन काटोगे । मेरे दरवाजे पर मुझे मारने आ रहे हो । नतीजा मालूम है क्या होगा। इतना बडा गुण्डा पडोस में बसता है थोडी खबर तो थी पर आज पूरी जानकारी भी मिल गयी ।
फण्डुनीसा –अब तो पता चल गया । मेरे रास्ते में जो आयेगा सबको देख लूंगा । इतनी में फण्डुनीसा की घरवाली हाथ में सरिया लेकर गाली देते हुए मिस्टर लाल के दरवाजे तक चढ आयी ।
फण्डुनीसा और उसकी घरवाली की करतूते देखकर सामने वाले लाला के परिवार के लोग ताली बजाबजाकर खुश हो रहे थे। यह उसी लालाजी का परिवार था जिनकी मौत से लेकर दूसरे क्रियाकर्मो तक फडनीस कभी नही दिखा था और ना ही आसपास के और लोग । मिस्टर लाल ना रात देखे ना दिन सब कामों में खडे रहे और उनकी धर्मपत्नी तो उनसे आगे थी चाय नाश्ता

खाना पानी तक का इन्तजाम की थी । आज वही लाला का परिवार मिस्टर लाल के साथ पडोस वाले गुण्डे फण्डुनीसा की करतूत पर खुश हो रहा था । उसकी ताकत बन रहा था । मिस्टर लाल फण्डुनीसा के दुर्व्यहार से दुखी तो थे ही लाला के परिवार के आग में घी डालने की करतूत से खिन्न भी । फण्डुनीसा और उसकी घरवाली अनाप ानाप बके जा रहे थे । मिस्टर लाल के बच्चे उन्हे घर में ले गये । काफी देर तक गुण्डे की ललकार हवा में गूंजती रही । ोरगुल सुनकर पीछे वाली गली से मिसेज मनवती और कई सभ्य लोग मिस्टर लाल के घर आ गये ।
मिसेज मनवती – मिसेज आरती से बोली क्या भाभी आप लोग पागल कुतो को पुचकारते हो । हर आदमी के दुख सुख में कूद पडते हो ।देखो आजकल के लोग नेकी के बदले क्या देते हैं । फण्डुनीसा के भी तो आप लोग बहुत काम आये हो । जब इसका बन रहा था तब भी मदद करते थे । उसके गृहप्रवेश के दिन तो रात भर पानी भरवाते रहे अपनी बोरिंग चला कर । इस दगाबाज दोगले फण्डुनीसा के घर में जब चोरी हुई थी तो कोई आगे पीछे नही था आपके घर को छोडकर । ये लाला का परिवार तो दरवाजा ही नही खोला था । पडोस वाला व्यभिचारी जो आज कूदकूद कर कनेक्शन करवाया हैं । यह भी तो नही दिखा था । जिनके संग दाल बांटी की पार्टी जमाता था वे लोग तो इस अमानु ा के मुंह पर मुसीबत में भी मूतने नही आये । थाने से लेकर घर तक का काम आप लोगो ने ही देखा था । इसके बाद भी फण्डुनीसा की घरवाली ने पडोसियों पर ही इल्जाम लगाया थी । भला हो पुलिस वालों का उसके मुंह पर थूक दिये यह कह कर कि अब तुमको कैसे पडोसी चाहिये । पडोसी में नही तुममें दो ा है । ारीफ सरीखे पडोसियों पर इल्जाम लगा रहे हो । तब फण्डुनीसा और उसकी घरवाली का मुंह देखने लायक हो गया था ।
मिसेज आरती–भाभीजी इंसान के काम तो इंसान ही आत हैं ना । हम लोगो से किसी का दुख दर्द बर्दाश्त नही होता । कहते है ना दर्द का रिशता सभी रिशतें से बडझ होाता है । जहां तक सम्भव होता हैं हम किसी की मदद करने से नही चूकते ।आदमी हमारी नेकी को भले भूला दे पर भगवान तो नही भूलायेगा ।
मिसेज मनवती– भाभी ऐसी भी नेकी किस काम की । जिसके साथ नेकी करो वह खून का प्यासा बन जाये । ऐसे लोग तडपते रहे तो भी ऐसी हालत में उनके मुंह पर पेशाब नही करना चाहिये । बेशरमों में जरा भी मर्यादा ो ा नही बची है । अगर ऐसे ही होता रहा तो कोई किसी के दुख सुख में काम कैसे आयेगा ।ऐसे ही पडोसियों की वजह से ाहर बदनाम हो रहा है ।पडोस में कोई मर जाता है पडोस को खबर न लगने का कारण ऐसे पडोसी है । फण्डुनीसा जैसे मतलबी पडोसी, पडोसी के फर्ज पर कहां खरे उतर सकते है ।
मिस्टर लाल–भाभीजी हम लोागो से किसी का बुरा नही देखा जाता । कैसे मुंह मोड ले अपने फर्ज से ।
मिसेज मनवती –आपकी की गई भलाई का क्या सिला दिया फण्डुनीसा और ये लाला का परिवार । उस पडोसी विमल भण्डार वाले को देखो कितना बढिया आपकी ओर से सम्बन्ध था पर सडी सी ब्रेड को लेकर उसने पडोसी के पाक रिश्ते को नापाक कर दिया । ब्रेड तो रख ही लिया पैसा भी नही दिया । बुरा भला कहा उपर से और भी ऐसे बहुत लोग है। नालायक गुण्डे खुद को खुदा समझने लगे है । ठीक हम लाोगो लोगो के पास दो नम्बर की कमाई नही है तो क्या पास मार्यादा तो है ।मान सम्मान हैं ारीफ लोगो के बीच बैठक है । भाई साहब

ऐसे लोगो के लिये खडा होने से बेहतर तो ये है कि अपने कानो में रूई डाल लो । मरने दो सालों को । जब तक ये लोग हवा से जमीन पर नही गिरेगे तब तक ऐसे ही ारीफों की ाराफत का मजाक उडाते रहेगे । आप तो अपने परिवार के साथ छुट्टी मना रहे थे रंग में भंग डाल दिया फण्डुनीसा गुण्डे ने । अमानु ा मारने की धौंस दे गया ।
मिसेज आरती–भाभीजी फण्डुनीसा ने अपनी जबान खराब की है ।शरीफ लोग ाराफत छोड देगे तो दुनिया का क्या होगा । आदमी से आदमी का नही भगवान से विश्वास उठने लगेगा । जैसी करनी वैसी भरनी । आज तो हम चुप रह गये कल कोई बडा वाला मिल जायेगा । हड़िडया चटका देगा । भगवान के उपर छोड दो ।बुरे काम का नतीजा कहां अच्छा आता है भाभीजी लीजिये पानी पीजिये ।
सभी आगन्तुक अपनी अपनी तरह से समझा रहे थे । ढाढस दे रहे थे । उधर फण्डुनीसा छाती फुलाकर अवैध तरीके से कनेक्शन करवा रहा था । फण्डुनीसा की घरवाली और लाला के घर की औरते मिस्टर लाल के घर की तरफ ताक ताककर ठुसुर भुसुर कर रही थी । कुछ देर में मिस्टर लाल के घर आये कालोनी के पीछे वाली गली के लोग अपने अपने घर चले गये । अवैध तरीके से कनेक्शन हो गया । दोपहर ढल चुकी थी । नवतपा का आठवा दिन था आग बरसा रहा था । इसी बीच आकाश में अंवारा बादल उमडने लगे थे । देखते देखते ही आंधी ने जोर पकड लिया ।आंधी के जोर ने सक्सेना के नशे को कम कर दिया । उसके मन मे विराजित इंसानियत जाग उठी । वह एक बार फिर मिस्टर लाल के मेनगेट पर दस्तक दिया । उसे देखकर मिस्टर लाल बोले अब क्या लेने आये हो भाई ।
सक्सेना–साहब माफी मांगने आया हूं ।
मिस्टरलाल– मैं कौन होता हूं माफी देने वाला ।जाओ भगवान से माफी मांगो । सच्चे और ारीफ इंसान को दुख देकर कोई भी सुखी नही रह सकता चाहे तुम रहो या तुम्हारा फण्डुनीसा ।
मिसेज आरती– भइया सक्सेना आप तो कनेक्शन करने आये थे परन्तु आपने हमारी ही नही अपनी भी मर्यादा का खून किया है । आदमियत का खून किया है । अपने फर्ज को रौंदा है ।आप कनेक्शन करने नही फण्डुनीसा की तरफ से मारपीट करने आये थे ।
सक्सेना–मैडमजी ार्मिन्दा हूं नशे में था ।जानता हूं पडोसी सगे से भी बडा होता है परन्तु फण्डुनीसा तो पडोस में रहने फण्डुनीसा ाराफत का चोला ओढे बदमाश है । मेरा नशा अब उतर गया है । फण्डुनीसा ने दारू पिलाया था । मुझे बडी गलती हो गयी अनजाने में क्षमा करना । भगवान फण्डुनीसा की तरह के पडोसी मेरे दुश्मन को भी न दे ।
मिस्टर लाल–सक्सेना कोई निभाये चाहे न निभाये मैं तो अपना फर्ज निभाऊंगा ।
मिसेज आरती– हां सक्सेना भइया ये ठीक कह रहे है ।शरीफ इंसान ाराफत को कैसे छोड देगा
सक्सेना–मैडमजी आप जैसे पडोसी तो किसी देवता से कम नही पर ये गुण्डे व्यभिचारी क्या जाने पडोसी के धर्म को ये तो चील गिध्द कौवों की तरह अपना मतलब साधते है ।
मिस्टरलाल–सक्सेना तुम जाओ । मुझे अपना फर्ज याद रहेगा ।
सक्सेना–भाई साहब पडोस वाले फण्डुनीसा और ऐसे लोगो से सावधान रहना...... मैं भी नहीं भूलूंगा अपना फर्ज कसम से.........
नन्दलाल भारती